http://www.sgbauonline.com/

M.A. Part-II (Music) Semester-III Examination

MUSIC (Vocal & Instrumental)

Paper—11

(Shastriya Sangitache Kriyatmak Siddhant)

Time : Three Hours] [Maximum Marks : 80

(हिन्दी माध्यम)

1. (अ) (i) पाठ्यक्रम में निहित कानड़ा अंग का एक विलंबित ख्याल/मसीतखानीगत स्वरलिपिबद्ध कीजिये तथा 4 आलाप और 2 तानें लिखिये।

(ii) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तराना/रजाखानी गत स्वरलिपिबद्ध कीजिये।

अथवा

(ब) (i) पाठ्यक्रम में से दाक्षिणात्य संगीत पद्धति के माने जानेवाले रागों में से किसी एक राग में मध्यलय ख्याल/रजाखानी गत स्वरलिपिबद्ध कीजिये।

(ii) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में धमार/रजाखानी गत स्वरलिपिबद्ध कीजिये। 16

2. (अ) राग-रागिणी वर्गीकरण स्पष्ट करते हुए किन्हीं दो ग्रंथों में वर्णित मतों के बारे में लिखिये।

अथवा

(ब) तोड़ी रागांग स्पष्ट करते हुए, किन्हीं दो तोड़ी के प्रकारों की शास्त्रीय जानकारी लिखिये। 16

3. निम्नलिखित पद्यरचना योग्य राग एवं ताल में स्वरलिपीबद्ध कीजिये (किसी भी राग में) :

(अ) बरनी न जाये री शाम की।
मुरत सुघर साँवरे की।।
तन वारुँ मन वारुँ और
सरबस वारुँ नंद नंदन की।।

अथवा

(ब) लागे नाहीं रे मनवा उनबीन
जाने कहाँ भटक रहे प्राणपिया।।
ना कोई पाती ना खबरिया
कां ऐसो कठिन भये सजन जिया।। 16

4. (अ) पाश्चात्य स्वरलिपि की प्रस्तावना लिखकर स्टाफ नोटेशन पद्धति विस्तार से लिखिये।

अथवा

(ब) निम्न तालों की लयकारी लिखिये :

(अ) आडाचौताल—सव्वागुन

(ब) झूमरा—पौनगुन

(क) 12 मात्राओं की तिगुन तिहाई के साथ

(ड) 7 मात्राओं की दुगुन तिहाई के साथ। 16

http://www.sgbauonline.com/

http://www.sgbauonline.com/

5. उचित विकल्प चुनिये :

(1) समानांतर स्वरसप्तक के स्वरों में स्वरांतर का आधार :

(अ) टोन (ब) सेमी टोन

(क) मायनर टोन (ड) मेजर टोन

(2) पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति के प्रकार :

(अ) 5 (ब) 6

(क) 4 (ड) 3

(3) भारतीय संगीत में 'अदिश' लिपिबद्ध करने की पद्धति :

(अ) सोल्फा (ब) सिग्नेचर

(क) पं. भातखंडे स्वरलिपि (ड) गात्रवीणा

(4) 'कजरी' गीत शैली के प्रचार का राज्य :

(अ) गुजरात (ब) उत्तरप्रदेश

(क) तमिलनाडु (ड) बिहार

(5) तोड़ी थाट में समाविष्ट न होने वाला राग :

(अ) भूपाल तोड़ी (ब) गुजरी तोड़ी

(क) बिलासखानी तोड़ी (ड) मियाँ की तोडी

(6) 4 में 6 की लयकारी अर्थात् :

(अ) सव्वागुन (ब) डेढ़गुन

(क) पौनगुन (ड) तिगुन

(7) दो से अधिक काल चिन्ह दर्शित ताल :

(अ) अध्धा (ब) झपताल

(क) सुलताल (ड) आड़ा-चौताल

(8) पाश्चात्य संगीत पद्धति का आधार तत्व :

(अ) माधुर्य (ब) स्वरांतर

(क) संवाद (ड) विवाद

(9) कानडा रागांग दर्शक स्वर समूह :

(अ) रे प म प (ब) ध़ ध़ प

(क) ग़ ग़ म रे सा (ड) सा रे ग़ ग़

(10) झूमरा-दीपचंदी ताल में समानता :

(अ) खंड (ब) मात्रा

(क) समान प्रयोग (ड) मात्रा, ताली, खंड

http://www.sgbauonline.com/

http://www.sgbauonline.com/

(11) 12 में 16 मात्रा अर्थात् :

(अ) तिप्पट (ब) सव्वापट

(क) निमपट (ड) इनमें से नहीं

(12) डेढ़गुन तथा दुगुन के बीच के लयकारी :

(अ) 7/4 (ब) 4/5

(क) 4/3 (ड) 3/4

(13) केवल मध्यलय ख्याल में प्रयुक्त ताल :

(अ) अध्धा (ब) झपताल

(क) तिलवाड़ा (ड) आड़ा-चौताल

(14) कुल रागांग संख्या :

(अ) 32 (ब) 30

(क) 35 (ड) 33

(15) पाश्चात्य संगीत में सप्तक दर्शक चिन्ह नाम :

(अ) क्लेफ (ब) रेस्ट

(क) लेजर (ड) क्वेव्हर

(16) पाश्चात्य संगीत में तीव्र स्वर दर्शक चिन्ह नाम :

(अ) नॅचरल (ब) फ्लैट

(क) शार्प (ड) ऑक्टेव 16

http://www.sgbauonline.com/